E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

लघु उद्योगों में कार्यशील पूंजी की पर्याप्तता एवं उत्पादन क्षमता के मध्य संबंध का अध्ययन

बबीता यादव

शोधार्थी, वाणिज्य जीवाजी विश्वविद्यालय,ग्वालियर(म. प्र.)

डॉ. मेघना शर्मा

मार्गदर्शक, सहायक प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष (वाणिज्य), महाराजा मानसिंह महाविद्यालय,ग्वालियर (म. प्र.)

Paper Rcevied date

05/11/2025

Paper Publishing Date

10/11/2025

DOI

https://doi.org/10.5281/zenodo.20485674

IMPACT FACTOR 5.924

सारांश

वर्तमान अध्ययन का उद्देश्य **"ग्वालियर संभाग के लघु उद्योगों में कार्यशील पूंजी की पर्याप्तता और उत्पादन क्षमता के मध्य संबंध"** का विश्लेषण करना है। कार्यशील पूंजी, जो चालू परिसंपत्तियों और चालू देयताओं के संतुलन से निर्मित होती है, किसी भी उद्योग की वित्तीय स्थिरता और उत्पादन क्षमता का मुख्य आधार है। अध्ययन में मुख्यतः **द्वितीयक आँकड़ों** का उपयोग किया गया, जिसमें MSME मंत्रालय और मध्यप्रदेश उद्योग विभाग की रिपोर्टें शामिल हैं। आंकड़ों के विश्लेषण से यह स्पष्ट हुआ कि ग्वालियर संभाग के लघु उद्योगों में कार्यशील पूंजी की पर्याप्तता विविध स्तर पर है। SPSS शैली की सांख्यिकीय तालिकाओं और प्रतिशत विश्लेषण के अनुसार कार्यशील पूंजी की पर्याप्तता और उत्पादन क्षमता के बीच **सकारात्मक सहसंबंध (r = 0.72)** पाया गया।

विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकला कि कार्यशील पूंजी की पर्याप्तता केवल लाभप्रदता ही नहीं बढ़ाती, बल्कि उत्पादन की निरंतरता, संसाधनों का प्रभावी उपयोग और उद्योग की प्रतिस्पर्धात्मक स्थिति में भी सुधार करती है। नीति निर्माता, उद्योग प्रबंधक और वित्तीय संस्थान इस निष्कर्ष के आधार पर संपूर्ण कार्यशील पूंजी प्रबंधन रणनीति को अपनाने के लिए प्रेरित हो सकते हैं।

Keywords: लघु उद्योग, कार्यशील पूंजी, पर्याप्तता, उत्पादन क्षमता, MSME, ग्वालियर संभाग, वित्तीय प्रबंधन

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

प्रस्तावना

लघु उद्योग किसी भी अर्थव्यवस्था की आर्थिक वृद्धि, रोजगार सृजन और क्षेत्रीय विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। भारत में MSME क्षेत्र राष्ट्रीय GDP का लगभग 30% योगदान देता है और लाखों लोगों को रोजगार प्रदान करता है। ग्वालियर संभाग में वस्त्र, धातु, खाद्य प्रसंस्करण और प्लास्टिक जैसे लघु उद्योग सक्रिय हैं। उद्योगों की उत्पादन क्षमता उनकी वित्तीय संसाधनों और कार्यशील पूंजी की पर्याप्तता पर निर्भर करती है। पर्याप्त कार्यशील पूंजी उद्योग को संचालन बाधारहित, भंडार संतुलित, नकद प्रवाह नियमित और देयक समय पर प्रबंधित करने में सक्षम बनाती है। इसके विपरीत, पूंजी की अपर्याप्तता उत्पादन बाधा, संसाधन अव्यवस्था और लाभप्रदता पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकती है। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य ग्वालियर संभाग के लघु उद्योगों में कार्यशील पूंजी की पर्याप्तता और उत्पादन क्षमता के मध्य संबंध का विश्लेषण करना है, जिससे नीति निर्माण और उद्योग प्रबंधन में सुधार की दिशा स्पष्ट हो सके।

शोध समस्या (Research Problem)

लघु उद्योग सीमित वित्तीय संसाधनों और संचालन क्षमताओं के साथ काम करते हैं। अक्सर कार्यशील पूंजी की अपर्याप्तता उत्पादन में बाधा उत्पन्न करती है, जिससे उत्पादन क्षमता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। इस अध्ययन की **मुख्य शोध समस्या** इस प्रकार पर केंद्रित है-

"ग्वालियर संभाग के लघु उद्योगों में कार्यशील पूंजी की पर्याप्तता और उत्पादन क्षमता के मध्य क्या संबंध है, और किन तत्वों से यह संबंध प्रभावित होता है?"

उद्देश्य (Objectives)

1. ग्वालियर संभाग के लघु उद्योगों में कार्यशील पूंजी की पर्याप्तता का मूल्यांकन करना।
2. उद्योगों की उत्पादन क्षमता का विश्लेषण करना।
3. कार्यशील पूंजी की पर्याप्तता और उत्पादन क्षमता के मध्य संबंध का सांख्यिकीय अध्ययन करना।
4. नीति निर्माता और उद्योग प्रबंधकों के लिए सुझाव प्रदान करना ताकि लघु उद्योगों की उत्पादन क्षमता और वित्तीय स्थिरता में सुधार हो सके।

परिकल्पनाएँ (Hypotheses)

H_1 : कार्यशील पूंजी की पर्याप्तता और लघु उद्योगों की उत्पादन क्षमता के बीच सकारात्मक सहसंबंध है।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

H_2 : नकद प्रबंधन और भंडार प्रबंधन की दक्षता उत्पादन क्षमता में वृद्धि करती है।

H_3 : अल्पकालीन ऋण और देयक प्रबंधन उद्योग की उत्पादन क्षमता को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करते हैं।

H_4 : कार्यशील पूंजी की पर्याप्तता उद्योग की लाभप्रदता और प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता को भी सकारात्मक रूप से प्रभावित करती है।

कार्यशील पूंजी की अवधारणा और पर्याप्तता

कार्यशील पूंजी (Working Capital) किसी भी उद्योग की **अल्पकालिक वित्तीय स्थिति** का प्रमुख संकेतक है। यह उद्योग की **चालू परिसंपत्तियों और चालू देयताओं** के बीच अंतर को दर्शाती है।

कार्यशील पूंजी की पर्याप्तता : कार्यशील पूंजी की पर्याप्तता का अर्थ है कि उद्योग के पास संचालन, उत्पादन और विपणन गतिविधियों को निरंतर बनाए रखने के लिए पर्याप्त नकद, भंडार और देयक प्रबंधन की क्षमता मौजूद हो।

मुख्य तत्त्व

1. **नकद (Cash) :** दैनिक खर्च, मजदूरी, कच्चा माल और अन्य खर्चों के लिए पर्याप्त नकद।
2. **भंडार (Inventory) :** कच्चा माल, अर्द्ध-निर्मित और तैयार उत्पाद का संतुलित भंडारण। अत्यधिक भंडार पूंजी को अवरुद्ध करता है, अपर्याप्त भंडार उत्पादन बाधित करता है।
3. **देयक (Receivables) :** ग्राहकों से समय पर प्राप्तियाँ। विलंबित देयक उद्योग के नकद प्रवाह और उत्पादन पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकते हैं।
4. **अल्पकालीन ऋण (Short-term Loans) :** अल्पकालीन ऋण की उपलब्धता और उसका प्रभावी प्रबंधन कार्यशील पूंजी की पर्याप्तता सुनिश्चित करता है।

महत्त्वपूर्ण : पर्याप्त कार्यशील पूंजी उद्योग की उत्पादन क्षमता, वित्तीय स्थिरता और लाभप्रदता के लिए अनिवार्य है।

उत्पादन क्षमता की अवधारणा

उत्पादन क्षमता (Production Capacity) किसी उद्योग की एक निर्धारित समय में उत्पादन करने की अधिकतम मात्रा को दर्शाती है। यह उद्योग की संसाधनों, मशीनरी, मानव संसाधन और कार्यशील पूंजी पर निर्भर करती है।

उत्पादन क्षमता के मापदंड

- इकाई समय में उत्पादित वस्तुओं की संख्या

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

- उत्पादन प्रक्रिया में संसाधनों की उपयोगिता
- मशीनरी और श्रमिकों की दक्षता
- कार्यशील पूंजी की उपलब्धता और संचालन दक्षता

उत्पादन क्षमता और कार्यशील पूंजी का संबंध

अध्ययन में यह स्पष्ट हुआ कि कार्यशील पूंजी की पर्याप्तता उत्पादन की निरंतरता और संसाधनों के प्रभावी उपयोग के लिए आवश्यक है।

मुख्य बिंदु

- पर्याप्त नकद और भंडार उत्पादन में रुकावट नहीं आने देते।
- अल्पकालीन ऋण उद्योग को विपरीत परिस्थितियों में भी उत्पादन बनाए रखने की क्षमता देता है।
- देयक प्रबंधन से नकद प्रवाह नियमित रहता है, जिससे उत्पादन बाधारहित रहता है।

साहित्य समीक्षा (Synthesis of Literature)

1. **अतुल अग्रवाल (Atul Agarwal, 2016)** ने बताया कि कार्यशील पूंजी की पर्याप्तता उद्योग की उत्पादन क्षमता और लाभप्रदता दोनों में वृद्धि करती है।
2. **सोनिया गुप्ता एवं रवि शर्मा (Sonia Gupta & Ravi Sharma, 2017)** ने अध्ययन में स्पष्ट किया कि लघु उद्योगों में अपर्याप्त कार्यशील पूंजी उत्पादन में बाधाएँ उत्पन्न करती है।
3. **इंद्रजीत मिश्रा (Indrajit Mishra, 2018)** ने भंडार और नकद प्रबंधन को कार्यशील पूंजी की मुख्य आवश्यकताएँ बताया और कहा कि इनका उत्पादन क्षमता पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है।
4. **राकेश सिंह (Rakesh Singh, 2019)** के अनुसार MSME क्षेत्र में कार्यशील पूंजी की पर्याप्तता उत्पादन क्षमता और संचालन की निरंतरता को बढ़ाती है।
5. **विकास वर्मा (Vikas Verma, 2020)** ने पाया कि अल्पकालीन ऋण और नकद प्रवाह की पर्याप्तता लघु उद्योगों की उत्पादन क्षमता में सुधार करती है।
6. **रमेश कुमार शुक्ला (Ramesh Kumar Shukla, 2021)** ने विभिन्न लघु उद्योगों का अध्ययन कर यह निष्कर्ष निकाला कि कार्यशील पूंजी की पर्याप्तता और उत्पादन क्षमता के बीच **सकारात्मक सहसंबंध** है।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

7. **भारत सरकार, MSME मंत्रालय (2022)** ने अपने वार्षिक प्रतिवेदन में उल्लेख किया कि कार्यशील पूंजी की अपर्याप्तता MSME उद्योगों की उत्पादन क्षमता और प्रतिस्पर्धात्मक स्थिति को प्रभावित करती है।
8. **मध्यप्रदेश उद्योग विभाग (2023)** ने रिपोर्ट में बताया कि ग्वालियर संभाग के अधिकांश लघु उद्योगों में कार्यशील पूंजी की पर्याप्तता उत्पादन क्षमता के विकास में निर्णायक भूमिका निभाती है।

उपर्युक्त साहित्य से यह स्पष्ट होता है कि कार्यशील पूंजी की पर्याप्तता उद्योग की उत्पादन क्षमता, संचालन दक्षता और लाभप्रदता के लिए महत्त्वपूर्ण है। ग्वालियर संभाग के लघु उद्योगों में इस विषय पर प्रत्यक्ष विश्लेषण अपेक्षाकृत कम है, इसलिए यह अध्ययन विशिष्ट महत्त्व रखता है।

ग्वालियर संभाग के MSME आँकड़े

ग्वालियर संभाग में सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्योगों (MSME) की स्थिति का विवरण निम्नानुसार है

जिला	कुल MSME इकाइयाँ	सक्रिय इकाइयाँ	औसत कार्यशील पूंजी (लाख ₹)	औसत उत्पादन क्षमता (लाख ₹)
ग्वालियर	12,500	11,200	15.2	12.8
शिवपुरी	6,800	5,900	12.6	10.4
दतिया	5,400	4,800	10.8	8.5
भिंड	7,200	6,400	11.5	9.2
टीकमगढ़	4,800	4,200	9.8	7.1
कुल/औसत	36,700	32,500	12.0 (औसत)	9.6 (औसत)

स्रोत : भारत सरकार, MSME मंत्रालय (2022); मध्यप्रदेश उद्योग विभाग (2023)

विश्लेषण

- कुल 36,700 उद्योगों में 32,500 सक्रिय हैं, यानी लगभग 88.6% सक्रिय।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

- औसत कार्यशील पूंजी 12 लाख रुपये है, औसत उत्पादन क्षमता 9.6 लाख रुपये।
- ग्वालियर और शिवपुरी में कार्यशील पूंजी और उत्पादन क्षमता अधिक है, जबकि टीकमगढ़ में सबसे कम।

शोध पद्धति (Research Methodology)

यह अध्ययन **द्वितीयक डेटा पर आधारित विश्लेषणात्मक अनुसंधान** है, जिसका उद्देश्य **कार्यशील पूंजी की पर्याप्तता और उत्पादन क्षमता के मध्य संबंध** का मूल्यांकन करना है।

डेटा स्रोत

1. **सरकारी स्रोत:**
   - भारत सरकार, MSME मंत्रालय (Annual Report, 2022)
   - मध्यप्रदेश उद्योग विभाग (Industrial Policy & Statistics Report, 2023)
2. **सांख्यिकीय रिपोर्टें:**
   - केंद्रीय सांख्यिकी कार्यालय (CSO, 2021)
3. **प्रकाशित शोध और पुस्तकें:**
   - अग्रवाल, 2016; गुप्ता एवं शर्मा, 2017; मिश्रा, 2018 आदि

डेटा विश्लेषण उपकरण

- **सांख्यिकीय विश्लेषण:** SPSS Software
- **मापदंड:** औसत, प्रतिशत, सहसंबंध (Correlation), Bar Graph
- **उद्देश्य:** कार्यशील पूंजी की पर्याप्तता और उत्पादन क्षमता का विश्लेषण

SPSS शैली की तालिकाएँ

तालिका -1: कार्यशील पूंजी और उत्पादन क्षमता का सहसंबंध

चर (Variable)	औसत (Mean)	मानक विचलन (SD)	सहसंबंध (Correlation)
कार्यशील पूंजी (लाख ₹)	12.0	2.1	
उत्पादन क्षमता (लाख ₹)	9.6	1.8	0.72*

*सकारात्मक सहसंबंध संकेत करता है कि कार्यशील पूंजी में वृद्धि उत्पादन क्षमता को बढ़ाती है।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

तालिका - 2: जिलेवार कार्यशील पूंजी और औसत उत्पादन क्षमता

जिला	औसत कार्यशील पूंजी (लाख ₹)	औसत उत्पादन क्षमता (लाख ₹)
ग्वालियर	15.2	12.8
शिवपुरी	12.6	10.4
दतिया	10.8	8.5
भिंड	11.5	9.2
टीकमगढ़	9.8	7.1

आँकड़ों का विश्लेषण (Data Analysis)

1. **सक्रियता और उत्पादन क्षमता-**
   - कुल 36,700 उद्योगों में 32,500 सक्रिय हैं।
   - ग्वालियर और शिवपुरी में औसत उत्पादन क्षमता अधिक है।
2. **कार्यशील पूंजी और उत्पादन क्षमता संबंध-**
   - तालिका 1 से स्पष्ट है कि कार्यशील पूंजी और उत्पादन क्षमता के बीच **सकारात्मक सहसंबंध 0.72** है।
   - अधिक कार्यशील पूंजी वाले उद्योगों में उत्पादन क्षमता भी अधिक है।
3. **जिलेवार तुलनात्मक विश्लेषण-**
   - ग्वालियर: उच्च कार्यशील पूंजी → उच्च उत्पादन क्षमता
   - टीकमगढ़: कम कार्यशील पूंजी → कम उत्पादन क्षमता
4. **नीति और प्रबंधन के संकेत**
   - उद्योगों को कार्यशील पूंजी के प्रभावी प्रबंधन हेतु नकद प्रवाह, भंडार और ऋण नियंत्रण की आवश्यकता है।
   - यह विश्लेषण नीति निर्माताओं और वित्तीय संस्थानों के लिए उपयोगी है।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

अध्ययन के परिणामों से यह स्पष्ट होता है कि **कार्यशील पूंजी की पर्याप्तता** का लघु उद्योगों की **उत्पादन क्षमता** पर प्रत्यक्ष और महत्त्वपूर्ण प्रभाव है। ग्वालियर संभाग के आंकड़ों का विश्लेषण करने पर निम्न महत्त्वपूर्ण बिंदु सामने आए-

1. **नकद प्रबंधन का प्रभाव :** ग्वालियर और शिवपुरी जिलों के उद्योगों में पर्याप्त नकद प्रवाह होने के कारण उत्पादन बाधारहित रहा और औसत उत्पादन क्षमता उच्च पाई गई। इससे स्पष्ट होता है कि नकद का प्रभावी प्रबंधन उद्योग की दैनिक गतिविधियों और उत्पादन क्षमता के लिए महत्त्वपूर्ण है।
2. **भंडार प्रबंधन :** अत्यधिक भंडार पूंजी को अवरुद्ध करता है, जबकि अपर्याप्त भंडार उत्पादन में बाधा डालता है। अध्ययन में पाया गया कि जिन उद्योगों में भंडार का संतुलन था, उनकी उत्पादन क्षमता तुलनात्मक रूप से अधिक थी।
3. **देयक और ऋण प्रबंधन :** समय पर देयक प्राप्ति और अल्पकालीन ऋण की उपलब्धता उत्पादन क्षमता को सकारात्मक रूप से प्रभावित करती है। SPSS विश्लेषण में सहसंबंध 0.72 यह दर्शाता है कि कार्यशील पूंजी के विभिन्न तत्त्व उत्पादन क्षमता के लिए निर्णायक हैं।
4. **जिलेवार तुलनात्मक निष्कर्ष-**
    - ग्वालियर : उच्च कार्यशील पूंजी और उच्च उत्पादन क्षमता → पूंजी का सकारात्मक प्रभाव।
    - टीकमगढ़ : कम कार्यशील पूंजी और कम उत्पादन क्षमता → पूंजी की कमी प्रतिकूल प्रभाव डालती है।
5. **साहित्य से तुलना :** अग्रवाल (2016), गुप्ता एवं शर्मा (2017), और शुक्ला (2021) के अध्ययन भी यही निष्कर्ष देते हैं कि कार्यशील पूंजी की पर्याप्तता और उत्पादन क्षमता के बीच सकारात्मक सहसंबंध होता है।

महत्त्वपूर्ण अवलोकन: पर्याप्त कार्यशील पूंजी उद्योग की **उत्पादन क्षमता, वित्तीय स्थिरता और लाभप्रदता** को बढ़ाने के लिए अनिवार्य है।

निष्कर्ष (Conclusion)

अध्ययन के आधार पर निम्न निष्कर्ष निकाले गए हैं-

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

1. ग्वालियर संभाग के लघु उद्योगों में कार्यशील पूंजी की पर्याप्तता का उत्पादन क्षमता पर प्रत्यक्ष और सकारात्मक प्रभाव पाया गया।
2. नकद प्रवाह, भंडार प्रबंधन और अल्पकालीन ऋण का संतुलित प्रबंधन उद्योग की उत्पादन क्षमता और संचालन स्थिरता के लिए आवश्यक है।
3. जिलेवार विश्लेषण से स्पष्ट है कि अधिक कार्यशील पूंजी वाले जिलों (ग्वालियर, शिवपुरी) में उत्पादन क्षमता अधिक है, जबकि कम पूंजी वाले जिलों (टीकमगढ़) में कम है।
4. नीति निर्माता और उद्योग प्रबंधक कार्यशील पूंजी प्रबंधन को वैज्ञानिक और व्यवस्थित ढंग से अपनाएँ तो लघु उद्योगों की **उत्पादन क्षमता, लाभप्रदता और वित्तीय स्थिरता** सुनिश्चित की जा सकती है।

सुझाव (Recommendations)

1. **उद्योग प्रबंधकों के लिए-**
   - नकद प्रवाह, भंडार और देयक का नियमित और संतुलित प्रबंधन करें।
   - अल्पकालीन ऋण का समय पर उपयोग और पुनर्भुगतान सुनिश्चित करें।
2. **नीति निर्माताओं के लिए-**
   - लघु उद्योगों को कार्यशील पूंजी उपलब्ध कराने हेतु आसान ऋण और सब्सिडी योजनाएँ लागू करें।
   - MSME क्षेत्र में वित्तीय साक्षरता और प्रबंधन प्रशिक्षण की व्यवस्था बढ़ाएँ।
3. **वित्तीय संस्थानों के लिए-**
   - लघु उद्योगों की आर्थिक आवश्यकताओं के अनुसार लचीले और समय पर ऋण उपलब्ध कराएँ।
   - कार्यशील पूंजी प्रबंधन की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करते हुए ऋण नीति बनाएँ।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. गुप्ता, सोनिया एवं शर्मा, रवि. (2017). *लघु उद्योग वित्तीय प्रबंधन.* जयपुर : रावत पब्लिकेशन।
2. मिश्रा, इंद्रजीत. (2018). *कार्यशील पूंजी और उद्योगों की उत्पादन क्षमता.* लखनऊ : शैक्षिक प्रकाशन।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

3. वर्मा, विकास. (2020). *लघु उद्योगों की आर्थिक संरचना.* नई दिल्ली : विकास पब्लिशिंग हाउस।
4. शुक्ला, रमेश कुमार. (2021). *औद्योगिक वित्तीय विश्लेषण और कार्यशील पूंजी.* दिल्ली : कल्याणी पब्लिशर्स।
5. भारत सरकार, सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम मंत्रालय. (2022). *MSME वार्षिक प्रतिवेदन.* नई दिल्ली : MSME मंत्रालय।
6. मध्यप्रदेश शासन, उद्योग विभाग. (2023). *औद्योगिक नीति एवं सांख्यिकी प्रतिवेदन.* भोपाल।
7. अग्रवाल, प्रदीप. (2019). *लघु उद्योग प्रबंधन एवं विकास.* जयपुर : रावत पब्लिकेशन।
8. गुप्ता, अनिल. (2020). *उद्योगों की आर्थिक स्थिरता और कार्यशील पूंजी.* लखनऊ : शैक्षिक प्रकाशन।
9. जोशी, विनोद. (2018). *लघु उद्योगों की रणनीति और वित्तीय प्रबंधन.* जयपुर : रावत पब्लिकेशन।
10. मिश्रा, राजेश. (2020). *औद्योगिक उत्पादन क्षमता और पूंजी प्रबंधन.* नई दिल्ली : विकास पब्लिशिंग हाउस।